NEERAJ®

राजनीति विज्ञान

(Political Science)

N-317

Chapter wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

N.I.O.S. *Class* – XII

National Institute of Open Schooling

By :
Dr. Naveen Mishra

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

CONTENTS

राजनीति विज्ञान

(Political Science)

Based on: **NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING – XII**

S.No.	*Chapters*	*Page*
	Solved Sample Paper - 1	**1–4**
	Solved Sample Paper - 2	**1–4**
	Solved Sample Paper - 3	**1–4**
	Solved Sample Paper - 4	**1–4**
	Solved Sample Paper - 5	**1–3**
S.No.	*Chapter*	*Page*
	व्यक्ति एवं राज्य	
1.	राजनीति विज्ञान का अर्थ तथा क्षेत्र	1
2.	राष्ट्र और राज्य	9
3.	समाज, राष्ट्र, राज्य और सरकार में भेद	17
4.	प्रमुख राजनीतिक सिद्धान्त	24
	भारतीय संविधान के मुख्य तत्त्व व्यक्ति एवं राज्य	
5.	भारतीय संविधान की प्रस्तावना तथा मुख्य विशेषताएँ	29
6.	मौलिक अधिकार	34
7.	राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धान्त तथा मौलिक कर्त्तव्य	42
8.	भारतीय संघीय व्यवस्था	51
9.	आपात्कालीन प्रावधान	57

S.No.	Chapter	Page
	सरकार की संरचना	
10.	संघीय कार्यपालिका	62
11.	भारतीय संसद	70
12.	भारत का सर्वोच्च न्यायालय	78
13.	राज्यों में कार्यपालिका	83
14.	राज्य विधानमण्डल	89
15.	उच्च न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालय	93
16.	स्थानीय शासन : शहरी और ग्रामीण	97
	व्यवहार में लोकतंत्र	
17.	वयस्क मताधिकार : चुनाव प्रक्रिया तथा प्रतिनिधित्व की प्रणालियाँ	104
18.	भारत में चुनाव प्रक्रिया	112
19.	राष्ट्रीय राजनीतिक दल	119
20.	क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय दल	122
21.	जनमत तथा दबाव समूह	125
	प्रमुख समकालीन मुद्दे	
22.	सम्प्रदाय, जाति और आरक्षण	133
23.	पर्यावरणीय जागरूकता	137
24.	अच्छा शासन या सुशासन	143
	भारत की विदेश नीति	
25.	मानवाधिकार	150
26.	भारत की विदेश नीति	156
27.	अमेरिका और रूस से भारत के सम्बन्ध	164
28.	भारत और उसके पड़ोसी : चीन, पाकिस्तान और श्रीलंका	172

S.No.	Chapter	Page
	वैकल्पिक मॉड्यूल–I	
	विश्व-व्यवस्था और संयुक्त राष्ट्र	
29.	समकालीन विश्व-व्यवस्था	178
30.	संयुक्त राष्ट्र	187
31.	संयुक्त राष्ट्र शांति बहाली गतिविधियाँ	194
32.	संयुक्त राष्ट्र और आर्थिक तथा सामाजिक विकास	200
	वैकल्पिक मॉड्यूल–II	
	भारत की प्रशासनिक व्यवस्था	
33.	लोक सेवा आयोग	205
34.	केन्द्र, राज्य व जिला स्तरीय प्रशासनिक तंत्र	210
35.	राजनीतिक कार्यकारिणी तथा नौकरशाही	218
36.	लोक शिकायत तथा निर्माण तंत्र	225

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Solved Sample Paper - 1

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

राजनीति विज्ञान–XII

(Political Science)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 100*

निर्देश: (1) इस प्रश्न-पत्र में **दो** खण्ड हैं–खण्ड 'अ' तथा खण्ड 'ब'।

(2) खण्ड 'अ' के **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

(3) खण्ड 'ब में **दो** विकल्प हैं। परीक्षार्थियों को केवल **एक विकल्प** के ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–अ

प्रश्न 1. कार्ल मार्क्स के अनुसार राजीति का क्या अर्थ है?

उत्तर–मार्क्सवाद मजदूर वर्ग का राजनीतिक दर्शन है। यह सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त है। सामाजिक परिवर्तन भौतिक कारणों से होते हैं और जिस तरीके से होते हैं, उसे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कहते हैं।

प्रश्न 2. प्रभुसत्ता का अर्थ राज्य के एक तत्व के रूप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, '4. प्रभुसत्ता'

प्रश्न 3. एकल एकीकृत न्याय प्रणाली से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-33, प्रश्न 7 (ख)

प्रश्न 4. राज्य के राज्यपाल की किन्हीं दो वित्तीय शक्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-85, '3. वित्तीय शक्तियाँ'।

प्रश्न 5. गांव की स्वच्छता तथा सफाई को उन्नत बनाये रखने में ग्राम पंचायत की भूमिका का आकलन कीजिए।

उत्तर–ग्राम पंचायत निम्नलिखित कार्य कर सकती है–

दिशानिर्देशों के अनुसार जी.पी.डब्ल्यू.एस.सी/वी.डब्ल्यू.एस.सी. का गठन डंपिंग यार्ड के लिए स्थान उपलब्ध कराना, नियम बनाना तथा उनका पालन न करने के लिए दंडात्मक कार्रवाई का निर्णय लेना और स्वच्छता की गतिविधियों की योजना, कार्यान्वयन एवं मॉनिटरिंग में जी.पी.डब्ल्यू.एस.सी./वी.डब्ल्यू.एस.सी.एस.सी. की मदद लेना। जी.पी.डब्ल्यू.एस.सी/वी.डब्ल्यू.एस.सी. के कार्य।

ग्राम पंचायत निम्नलिखित कार्य करने के लिए जी.पी.डब्ल्यू.एस.सी/वी.डब्ल्यू.एस.सी. को निर्देश कर सकती है–

1. समस्या की गंभीरता के लिए सर्वेक्षण
2. स्वच्छता की कार्य योजना तैयार करना
3. स्वच्छता कार्यक्रम का कार्यान्वयन
4. डंपिंग यार्ड के लिए स्थान उपलब्ध कराना
5. गलियों में झाड़ू लगाने, नालियों का निर्माण एवं सफाई करने, ठोस एवं अपशिष्ट जल के निस्तारण के लिए व्यवस्था करना
6. पेय जल स्त्रोतों/आउटलेट पर प्लेटफार्म का अनुरक्षण और
7. गाँव के लोगों में स्वच्छता एवं सफाई के बारे में जागरूकता पैदा करना।

प्रश्न 6. आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली को सामान्य बहुमत प्रणाली से किस आधार पर बेहतर समझा जाता है?

उत्तर–आनुपातिक चुनाव प्रणाली के अन्तर्गत लगभग सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को चुनने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि सभी वर्ग की समस्याओं की तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित हो सके।

सामान्यतया अल्पसंख्यक वर्ग के प्रतिनिधियों की संख्या बहुसख्यंक वर्ग के प्रतिनिधियों की संख्या से कम होती है। इसका अर्थ है कि सभी वर्गों के प्रतिनिधियों का समानुपातिक चुनाव होना चाहिए। विधानपालिका में प्रतिनिधियों के लिए सीटों का बंटवारा भी समानुपातिक ढंग से किया जाता है। कभी-कभी सामान्य बहुमत प्रणाली में ऐसा भी देखने को मिलता है कि एक विधानसभा क्षेत्र में किसी पार्टी को सीटें तो बहुत मिल जाती हैं लेकिन उसके वोटों का प्रतिशत कम होता है। यहाँ तक कि 25% से भी कम होता है, फिर भी वह जीत जाती है। इससे उचित रूप में जनता का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता, जिस कारण आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली सामान्य बहुमत प्रणाली से बेहतर मानी जा सकती है।

प्रश्न 7. भारत में लागू (प्रस्तावित) किए गए किन्हीं दो चुनाव सुधारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–भारत में लागू चुनाव सुधार–

1. मत-पत्र के स्थान पर EVM का प्रयोग।
2. नकारात्मक मत का विकल्प
3. स्त्रियों एवं निर्बल समूहों के लिए सीटों का आरक्षण।

प्रश्न 8. 1950 के दशक में भारत और चीन के बीच सीमा-विवाद क्या था?

उत्तर–भारत और चीन के बीच संघर्ष का मुख्य कारण तिब्बत और सीमा विवाद है। भारत और चीन के बीच 1954 में हुए समझौते के अनुसार तिब्बत के ऊपर चीन की प्रभुसत्ता को भारत ने स्वीकार कर लिया है, लेकिन 1962 के युद्ध के समय भारत के कुछ क्षेत्रों

www.neerajbooks.com

जिन पर चीन का कब्जा हो गया था, वह अब भी बरकरार है, जिसके कारण दोनों देशों के बीच सीमा विवाद समाप्त नहीं हुआ है।

प्रश्न 9. भारत तथा पाकिस्तान दोनों द्वारा किए गए परमाणु परीक्षणों के प्रभाव का आकलन कीजिए।

उत्तर–भारत और पाकिस्तान द्वारा परमाणु परीक्षण के पश्चात् दुनिया के अधिकतर देश भारत पाकिस्तान के खिलाफ हो गए तथा अमेरिका, जापान, चीन, कनाड़ा आदि देशों के साथ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने निंदा की तथा अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए। इन प्रतिबंधों के फलस्वरूप भारत की तकनीकी प्रगति थोड़ी सुस्त अवश्य हुई। हालांकि भारत से सभी प्रतिबंध कुछ समय बाद हटा लिए गए थे।

प्रश्न 10. राज्य तथा समाज में किन्हीं पाँच अंतरों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–समाज और राज्य दो भिन्न शब्द हैं, राज्य एक राजनैतिक परिकल्पना है, जो बाह्य सामाजिक व्यवस्था पर नियंत्रण स्थापित करती है, जबकि समाज एक सामाजिक परिकल्पना है, जिसमें संगठन और संस्थाएँ निहित होती हैं। राज्य एक साधन होता है, जिसका अन्त समाज है। एक संगठन होने के बावजूद भी राज्य दूसरी संस्थाओं और संगठनों से भिन्न होता है। प्रभुसत्ता सिर्फ राज्य के पास होती है, जिसे अन्य संगठनों को भी स्वीकार करना होता है।

प्रश्न 11. लोकतांत्रिक सरकार तथा सीमित राज्य की अवधारणा के प्रतिपादक के रूप में उदारवाद की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-25, प्रश्न 1 (पाठगत प्रश्न)

प्रश्न 12. मौलिक अधिकारों से क्या अभिप्राय है? स्वतंत्रता के अधिकार के अन्तर्गत दी गई छः स्वतंत्रताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-37, प्रश्न 1 (पाठांत प्रश्न), पृष्ठ-38, प्रश्न 3

प्रश्न 13. किसी द्विसदनीय विधायिका में राज्य विधानमण्डल का कौन-सा सदन अधिक शक्तिशाली होता है और क्यों?

उत्तर–अधिकांश राज्यों में एक सदनीय विधानमण्डल है। यह विधानमण्डल राज्यपाल तथा विधानसभा के मिलने से बनता है। किसी भी राज्य में विधानपरिषद का निर्माण या उसे समाप्त करने का अधिकार संसद को प्राप्त है। विधानपरिषद आंशिक रूप से अप्रत्यक्ष निर्वाचित होती है तथा कुछ भाग मनोनीत किया जाता है। यह राज्यसभा की तरह ही एक स्थायी सदन है, जो कभी भी भंग नहीं होता है। इसके सदस्यों का कार्यकाल छह वर्षों का होता है। प्रत्येक दो वर्ष के पश्चात् एक तिहाई सदस्य सेवानिवृत्त हो जाते हैं।

विधानपरिषद के लिए न्यूनतम आयु 30 वर्ष तथा विधानसभा के लिए 25 वर्ष है। विधानसभा के सदस्य जनता द्वारा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। इसका कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। लेकिन राज्यपाल मुख्यमंत्री की सलाह पर इसे अवधि पूरी होने से पहले भी भंग कर सकता है। संवैधानिक संकट की स्थिति में राष्ट्रपति चाहे तो इसे भंग भी कर सकता है। राज्य विधायिका के कार्यों में कानून बनाना, कार्यपालिका तथा वित्त पर नियंत्रण बनाए रखना, चुनाव सम्बन्धी तथा संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करना आदि शामिल हैं।

विधानसभा का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। साधारण विधेयक, धन विधेयक, कार्यपालिका पर नियंत्रण और राष्ट्रपति के निर्वाचन सम्बन्धी कार्यों में विधानपरिषद की शक्ति विधानसभा से कम है।

प्रश्न 14. भारतीय समाज में जाति की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-134, प्रश्न 2 (पाठांत प्रश्न)

प्रश्न 15. पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्धता को पूरा करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए किन्हीं पाँच महत्वपूर्ण उपायों को उजागर कीजिए।

उत्तर–अनेकों देशों में पर्यावरण संरक्षण के विषय में जो जिज्ञासा बढ़ी है, उससे नई प्रक्रिया का जन्म हुआ है और 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन हुआ। 20 साल बाद रियो दी जेनेरियो में पर्यावरण और विकास का सम्मेलन हुआ था, जिसमें इंदिरा गांधी ने सबसे पहले यह बात कही थी कि सबसे बड़ा प्रदूषक गरीबी ही है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जब तक इसका उन्मूलन नहीं होगा तब तक इस पृथ्वी पर पर्यावरण विनाश को नहीं बचाया जा सकता है। इसी कारण एजेंडा 21 को बढ़ावा दिया गया।

मांट्रियल सम्मेलन तथा मौसम परिवर्तन जैव विविधता और वन पर रियो दी जेनेरियो में हुआ सम्मेलन, पर्यावरण संरक्षण के प्रयास में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इन सभी सम्मेलनों में भारत ने भाग लिया तथा इनके सिद्धान्तों को लागू करने के लिए व्यवस्थित कदम उठाया। UNDP द्वारा पारित पर्यावरण कार्य प्रक्रिया लागू करना बाकी है। औद्योगिक प्रदूषण पर काबू करने के लिए 31 योजनाएँ हैं, जो विश्व बैंक द्वारा अनुमोदित की गई हैं तथा जिसमें 105 करोड़ डालर खर्च होना था। छोटे उद्योगों की एक सी बहिर्स्रावी इकाई है, जो कालांतर में अपनाई जाने वाली है। बढ़ते उद्योगों की व्यवस्था में इसे देखा जा सकता है। इस प्रकार एक निश्चित समय में प्रदूषित औद्योगिक इकाइयों की पर्यावरण बचाव के लिए पहचान की गई है। कुछ औद्योगिक इकाइयों की स्थापना करने से पहले यह आवश्यक है कि पर्यावरण को साफ बनाया जाए। दोपहिए, तीन पहिए वाहनों तथा कुछ प्रसिद्ध कारों में प्रदूषण मुक्त इंजनों को लगाना होगा। विश्व खाद्य संगठन द्वारा सहायतार्थ योजना राष्ट्रीय वन सम्पदा के लिए अग्रसर है। पर्यावरण ब्रिगेड़, वन विनाश ब्रिगेड़ तथा पारिस्थितिक कार्य तल की स्थापना गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा की गई है।

प्रश्न 16. मानवधिकारों की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। मानवधिकारों की सभी श्रेणियों में एकसमान पाई जाने वाली किन्हीं तीन विशेषताओं की पहचान कीजिए।

उत्तर–मानवाधिकारों के सम्बन्ध में हमें इस मूलभूत तथ्य को ध्यान में रखना होगा कि यह किसी राजाज्ञा अथवा किसी राजनीतिक प्रभुता संपन्न देश द्वारा प्रदान किए गए उपहार या पारितोषिक (इनाम) नहीं हैं, बल्कि यह वे अधिकार हैं, जो मानव अस्तित्व में अन्तर्निहित रहते हैं। मानवाधिकारों से सम्बन्धित किसी भी कानून का उद्देश्य होता है, इसकी पहचान कराना, उन्हें व्यवहृत तथा नियमित करना तथा

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

राजनीति विज्ञान
(POLITICAL SCIENCE)

व्यक्ति एवं राज्य

राजनीति विज्ञान का अर्थ तथा क्षेत्र

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

परिचय

राजनीति विज्ञान के इस प्रथम अध्याय में राजनीति विज्ञान का अर्थ समझने का प्रयास किया गया है। पुराने विचारों के अनुसार राजनीति विज्ञान का प्रारम्भ और अन्त राज्य से होता है। दूसरे शब्दों में, राजनीति विज्ञान राज्य और सरकार का अध्ययन करने वाला विषय है। लेकिन आधुनिक मतों के अनुसार राजनीति विज्ञान राज्य और सरकार के साथ-साथ शक्ति और सत्ता का भी अध्ययन करने वाला विषय है। आज के समय में राजनीति विज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है, जिसके अन्तर्गत राज्य और राजनीतिक व्यवस्था, सरकार, शक्ति, मानव और उसके मानव व्यवहार तथा राजनीतिक समस्याओं आदि का भी अध्ययन किया जाता है। इस अध्याय के अन्तर्गत मूलभूत अवधारणा जैसे न्याय तथा नागरिकों के लिए इसके महत्त्व का भी अध्ययन किया गया है। इस अध्याय के अध्ययन के बाद हम राजनीति विज्ञान के अर्थ और परिभाषा को समझ सकेंगे। साथ ही हम राजनीति विज्ञान और राजनीति के बीच के अन्तर को भी हम जान पाएँगे। साथ ही इस अध्याय में राज्य की भूमिका, सरकार की कार्यप्रणाली तथा नागरिकों से सरकार के सम्बन्ध के विषय में राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के विषय में भी वर्णन किया गया है। इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् हमें नागरिक और राज्य के लिए न्याय की प्रासंगिकता को जानने में मदद मिलेगी।

प्राचीन यूनानी विचारकों के अनुसार, राजनीति विज्ञान एक राजनीतिक दर्शन है जबकि वे लोग राजनीति के नैतिक पहलुओं पर बल देते हैं। मध्य काल में राजनीति विज्ञान धर्म का एक हिस्सा था तथा राजनीतिक सत्ता धर्म की सत्ता की सहयोगी थी। आधुनिक समय में राजनीति विज्ञान का रूप वास्तविक तथा धर्मनिरपेक्ष हो गया है। पूँजीवाद के जन्म के कारण औद्योगिक क्रान्ति आई, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के कार्य परिवर्तित हो गए। राजनीति विज्ञान अब राज्य का एक विशेष विज्ञान का विषय बन गया। यह सरकार के विभिन्न अंगों, जैसे–व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का भी अध्ययन करता है। लॉस्की के अनुसार, राजनीति विज्ञान पुरुष तथा स्त्री के जीवन तथा राज्य के साथ उसके सम्बन्धों का भी अध्ययन करता है। बीसवीं शताब्दी में व्यावहारिक उपागम ने राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन के बदले उनके कार्यों तथा राजनीतिक क्रियाकलापों के अध्ययन तथा महिलाओं और पुरुषों के व्यवहार के अध्ययन पर विशेष बल दिया है। राजनीति विज्ञान और राजनीति दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध राजनीति के अध्ययन से है जबकि राजनीति नागरिकों की समस्याओं, राजनीतिक

www.neerajbooks.com

संघर्ष, क्रिया और शक्ति से सम्बन्धित होती है। शक्ति का अर्थ होता है दूसरों को नियंत्रित करने की क्षमता। शक्ति वह क्षमता होती है, जो दूसरों से अपनी इच्छानुसार कार्य कराती है। शक्ति और वैधता दोनों मिलकर ही सत्ता का रूप प्राप्त करते हैं।

पाठगत प्रश्न 1.1

कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध दोनों ..... और ..... विषयों से है।
(आनुभविक, नियामक, औपचारिक)

(ख) राजनीति विज्ञान ..... और ..... का अध्ययन करता है।
(समाज, राज्य, राष्ट्र, शक्ति, वर्ग)

(ग) पॉलिटिक्स शब्द ..... शब्द से लिया गया है।
(पोलिस, पुलिस, राज्य)

(घ) ..... ने कहा है कि राजनीति का प्रारम्भ तथा अन्त राज्य के साथ होता है।
(गेटेल, गार्नर, लासवेल)

(ङ) ..... ने राजनीति विज्ञान को शक्ति का रूप एवं शक्ति को बांटने का अध्ययन कहा है।
(कप्लान, इस्टन, गार्नर)

उत्तर–(क) आनुभविक, नियामक, (ख) राज्य एवं शक्ति, (ग) पोलिस, (घ) गार्नर, (ङ) कप्लान।

पाठगत प्रश्न 1.2

कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) ..... ने राजनीति विज्ञान को 'मास्टर विज्ञान' कहा है। *(प्लेटो, अरस्तू, लॉस्की)*

(ख) व्यवहारवादी दृष्टिकोण ने राजनीति विज्ञान के..... .भाग पर विशेष महत्त्व दिया है।
(विज्ञान, दर्शन, राजनीतिक)

(ग) ..... राजनीति को ने अमीर और गरीब वर्ग के बीच संघर्ष बताया है।
(ग्रीक्स, रोमन, मार्क्सवादी)

(घ) व्यावहारिक राजनीति की कला ..... के द्वारा प्राप्त की जाती है।
(ईमानदारी, नैतिकता, चालबाजी)

उत्तर–(क) अरस्तू, (ख) विज्ञान, (ग) मार्क्सवाद, (घ) चालबाजी।

पाठगत प्रश्न 1.3

कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) 'राज्य' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ..... ने किया था। *(प्लेटो, मैक्यावली, कौटिल्य)*

(ख) "स्वतंत्रता" शब्द की उत्पत्ति ..... भाषा के लिवर शब्द से हुई है।
(ग्रीक, रोमन, लैटिन)

(ग) ..... उदारवादी नकारात्मक स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं।
(प्रारम्भिक, आधुनिक, इच्छा, स्वतंत्रतावादी)

(घ) ..... की स्वतंत्रता के लिए कुछ लोगों की स्वतंत्रता को कानून द्वारा रोका जाना चाहिए।
(सभी, कुछ)

(ङ) निरंतर ..... स्वतंत्रता का मूल्य है।
(सतर्कता, स्वतंत्रता, आजादी)

उत्तर–(क) मैक्यावेली, (ख) लैटिन, (ग) प्रारम्भिक, (घ) सभी, (ङ) सतर्कता।

पाठगत प्रश्न 1.4

कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) ..... के अनुसार न्याय राजनीतिक मूल्यों को जोड़ता है। *(प्लेटो, अरस्तू, बार्कर)*

(ख) असमानता का अर्थ ..... नहीं है।
(व्यवहार की पहचान, अवसर की समानता)

(ग) नोजीक के अनुसार न्याय का अर्थ है .....।
(अधिकार, दायित्व, आवश्यकता)

(घ) रॉल्स के अनुसार असमानता स्वीकार्य है, अगर वह ..... को लाभ पहुँचाती है।
(धनी, मध्यम वर्ग, पिछड़ा वर्ग)

(ङ) समानता का अर्थ है ..... ।
(विशेषाधिकार का अभाव, पुरस्कार की पहचान, स्वतंत्रता)

उत्तर–(क) बार्कर, (ख) व्यवहार की पहचान, (ग) अधिकार, (घ) पिछड़ा वर्ग, (ङ) विशेषाधिकार का अभाव।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पाठान्त प्रश्न

प्रश्न 1. राजनीति विज्ञान के अर्थ का वर्णन कीजिए।

उत्तर–राजनीति विज्ञान समाज विज्ञान का वह विषय है, जो राज्य की स्थापना तथा सरकार के सिद्धान्तों का अध्ययन करता है। जे.डब्ल्यू. गार्नर का मानना है कि राजनीति विज्ञान का प्रारम्भ और अन्त राज्य के साथ होता है। जबकि आर.जी. गैटेल का मानना है कि राजनीति विज्ञान राज्य के भूत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन करता है। हैरोल्ड जे. लॉस्की के अनुसार, राजनीति विज्ञान का अध्ययन मनुष्य के जीवन और एक संगठित राज्य से सम्बन्धित है। इस कारण समाज विज्ञान के रूप में, राजनीति विज्ञान या शास्त्र समाज में रहने वाले व्यक्तियों के उस पहलू का अध्ययन करता है, जो उनके क्रियाकलापों और संगठनों से सम्बन्धित तथा राज्य द्वारा निर्मित नियम और कानून के अन्तर्गत शक्ति अर्जित करना चाहता है।

राजनीति शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'पोलिस' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'नगर राज्य'। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने राजनीति विज्ञान को राज्य या सरकार के सन्दर्भ में परिभाषित किया है। जबकि यह परिभाषा राजनीति विज्ञान के सन्दर्भ में अपूर्ण है, क्योंकि राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध शक्ति से भी होता है। राजनीति विज्ञान के सन्दर्भ में हैरोल्ड डी. लासवेल और इब्राहम कप्लान द्वारा दी गई परिभाषा को ज्यादा उपयुक्त माना जा सकता है, जिसके अनुसार, "यह शक्ति का आकार तथा भाग है।" दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शक्ति का सम्बन्ध राज्य और सरकार दोनों से होता है। राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध प्राय: न्यायसंगत शक्ति से होता है। चूँकि विज्ञान का अर्थ होता है किसी घटना का क्रमबद्ध परीक्षण तथा अवलोकन के द्वारा अध्ययन करना, जबकि राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध राज्य और शक्ति से होता है, जो प्राय: न्यायसंगत है। इस तरह विज्ञान किसी घटना का क्रमबद्ध परीक्षण तथा अवलोकन के द्वारा अध्ययन करता है जबकि राजनीति विज्ञान राज्य और शक्ति के प्रत्येक पहलुओं का अध्ययन करता है।

इसके अतिरिक्त राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध आनुभविक तथ्यों तथा प्राथमिक समस्याओं से भी होता है। वास्तविकता का सम्बन्ध 'क्या है' से होता है, जबकि मूल्य का अर्थ 'क्या होना चाहिए' से होता है। उदाहरण के लिए अगर हम कहते हैं कि भारत में संसदीय प्रजातंत्र है तो इसका अर्थ है कि यह कथन आनुभविक तथ्य पर आधारित है। यह कथन भारत की आज की स्थिति को दर्शाता है। लेकिन अगर हम कहते हैं कि भारत को अध्यक्षात्मक प्रजातंत्र को अपनाना चाहिए तो यह कथन एक नियामक होगा। राजनीति विज्ञान सिर्फ राज्य के वर्तमान क्रियाकलापों का ही अध्ययन नहीं करता बल्कि यह भी बताता है कि उसको परिवर्तित कर कैसे और अच्छा बनाया जा सकता है। आनुभविक कथन अवलोकन पर आधारित होने के कारण सत्य या असत्य हो सकते हैं। लेकिन मूल्यांकनात्मक कथन आवश्यक रूप से नैतिकता पर आधारित होने के कारण कभी भी सत्य या गलत नहीं हो सकता। राजनीतिक दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध औपचारिक कथन से होता है। राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध आनुभविक कथन से होता है, जो वर्तमान राजनीतिक संस्थाओं तथा व्यवहार का मूल्यांकन करता है, जिससे उसे बेहतर बनाया जा सके।

प्रश्न 2. राजनीति विज्ञान के एक विषय के रूप में इसके विकास पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–चौथी शताब्दी के पूर्व में ग्रीक लोगों ने सर्वप्रथम राजनीति का क्रमबद्ध अध्ययन प्रारम्भ किया। प्लेटो और अरस्तु जैसे महान दार्शनिकों द्वारा इसे व्यापक रूप से प्रयोग में लाया गया। अरस्तु के अनुसार, राजनीति विज्ञान ही एक प्रमुख विज्ञान है। अरस्तु ने इसके अन्तर्गत न सिर्फ एक राजनीतिक संस्थान नगर-राज्य को शामिल किया बल्कि परिवार, समाज तथा अन्य सामाजिक संगठनों को भी इसके अन्तर्गत शामिल कर लिया। ग्रीक लोगों के अनुसार, राजनीति में सभी गतिविधियाँ शामिल थीं। इस तरह राजनीति के प्रति प्राचीन ग्रीक चिन्तकों का दृष्टिकोण दार्शनिक था। जबकि इसके विपरीत प्राचीन रोमन चिन्तकों के विचारों में राजनीति का वैधानिक पक्ष अधिक महत्त्वपूर्ण था। मध्यकाल में राजनीति विज्ञान धार्मिक आदेशों और धार्मिक संस्थाओं (चर्चों) की ही एक शाखा थी। इस काल में राजनीतिक सत्ता धार्मिक संस्थाओं (चर्चों) के अधीन थी।

सामान्यतया राजनीति का अर्थ दलगत राजनीति से लगाया जाता है, लेकिन राजनीति का क्षेत्र इससे कहीं अधिक व्यापक होता है। यह राज्य और शक्ति का सुव्यवस्थित अध्ययन करने वाला विषय है।

आधुनिक काल में राज्य के आकार में विस्तार के परिणामस्वरूप राजनीति विज्ञान ने एक वास्तविक, व्यावहारिक और धर्मनिरपेक्ष रूप ग्रहण कर लिया। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् राज्य की भूमिका मात्र आन्तरिक कानून और व्यवस्था बनाए रखने तथा बाहरी आक्रमणों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करने

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

तक सीमित रह गई। लेकिन नई आर्थिक व्यवस्था, जिसे 'पूँजीवाद' का नाम दिया गया, के जन्म के पश्चात् राज्य के स्वरूप में परिवर्तन आ गया।

दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् व्यवहारवादी दृष्टिकोण के रूप में राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत एक तीसरी विचारधारा ने जन्म लिया। 1950 तथा 1960 के दशक में अमेरिकी राजनीतिक विज्ञान में व्यवहारवादी आन्दोलन की शुरुआत के परिणामस्वरूप राजनीति के वैज्ञानिक पक्ष पर विशेष बल दिया जाने लगा। प्राकृतिक विज्ञान जैसे भौतिकी तथा वनस्पति विज्ञान की विधियों की तरह वे लोग राजनीति को भी एक नमूना (मॉडल) बनाने के प्रयास में जुट गए।

आनुभविक समस्याओं से प्रेरित होकर व्यवहारवादियों ने एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। प्रेरक विधि को मानने वाले अवलोकन, परीक्षण तथा अध्ययन के बाद ही किसी परिणाम तक पहुँचते हैं। उदाहरण के रूप में जब कुछ व्यवहारवादियों ने काले अमेरिकीवासियों को प्रजातान्त्रिक दल को मत देते हुए देखा तब वे इस परिणाम तक पहुँचे कि अमेरिका में रहने वाले काले रंग के लोग भी प्रजातंत्रवादियों के पक्ष में मतदान करते हैं।

व्यवहारवादी दृष्टिकोण ने राजनीतिक संस्थाओं एवं उसकी संरचनाओं की गतिविधियों की तरफ से अपना ध्यान हटाकर उनकी कार्यप्रणाली पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। यह दृष्टिकोण राजनीतिक गतिविधियों तथा राजनीतिक संस्थाओं को नियन्त्रित करने वाले महिला अथवा पुरुष कर्मियों की गतिविधियों एवं व्यवहार का अध्ययन करने पर विशेष बल देता है। उनके अनुसार व्यवहार के माध्यम से जो राजनीतिक गतिविधियाँ स्पष्ट होती हैं वे ही राजनीतिक विज्ञान की विषय-वस्तु हैं।

राजनीतिक गतिविधियों के अन्तर्गत किसी व्यक्ति द्वारा चुनाव लड़ने की प्रक्रिया शामिल है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा जारी किसी नीति से प्रभावित होने वाले जनता के किसी वर्ग द्वारा किया जाने वाला आन्दोलन भी इसके अन्तर्गत आता है। विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा निजी हितों पर बल देने के परिणामस्वरूप इन गतिविधियों के अन्तर्गत प्रतिस्पर्द्धा, विवाद तथा मतभेद सभी कुछ सम्मिलित होते हैं। इसके साथ ही राजनीति की विभिन्न गुणवत्ता के अन्तर्गत सरकार द्वारा प्रयोग किए जाने वाले भौतिक बल भी इसके अन्तर्गत आते हैं। इनके अतिरिक्त सरकार द्वारा निर्मित सन्तुलन नीतियों तथा उसके प्रभाव भी राजनीति विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

राजनीति को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है, जहाँ व्यक्ति अथवा समुदाय अपने निर्धारित लेकिन विरोधमूलक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। एक प्रक्रिया के रूप में राजनीति स्रोतों को अधिकारपूर्वक निर्धारित करने का प्रयास करता है, जिसे इस्टन ने मूल्य की संज्ञा दी है। यह राजनीतिक संरचनाओं, संस्थाओं, प्रक्रियाओं तथा गतिविधियों का अध्ययन करते हुए बल प्रयोग की संभावनाओं को भी मान्यता प्रदान करता है। उन्नीसवीं शताब्दी के जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स के अनुसार, दो वर्गों के ऐसे झगड़े, जिनका समाधान सम्भव न हो, उसका अध्ययन ही राजनीति है। इन दो समूहों में पहला वर्ग शोषित है, जिसके पास निजी सम्पत्ति नहीं है और दूसरा वर्ग शोषक है। मार्क्स का यह भी मानना है कि गरीबों का उद्धार मात्र आन्दोलन के द्वारा ही सम्भव है, जो नीति सम्पत्ति जैसी संस्था को खत्म कर समाज के वर्ग को समाप्त कर देंगे तथा बिना वर्ग के समाज की स्थापना करेंगे। लेकिन मार्क्सवादी विचारधारा के विपरीत राजनीति का एक दूसरा अर्थ भी है, जिसके अनुसार राजनीति झगड़ों को समाप्त कर न्याय प्रदान करता है। इस विचारधारा के अनुयायियों को उदारवादी कहा जाता है। राजनीति की मार्क्सवादी विचारधारा राजनीति की उदारवादी विचारधारा के प्रतिक्रियास्वरूप विकसित हुई है।

प्रश्न 3. राजनीति विज्ञान के कार्यक्षेत्र की राज्य की भूमिका तथा सरकार के कार्यों के सन्दर्भ में व्याख्या कीजिए।

उत्तर–इटली के राजनीतिक मैकियावेली ने आधुनिक सन्दर्भ में सर्वप्रथम राज्य शब्द का प्रयोग किया था। उसी समय से हर राजनीति का राजनीति विज्ञान के अध्ययन के सन्दर्भ में राज्य के अध्ययन पर ही बल देता है। राज्य के प्रमुख चार तत्त्व होते हैं, जैसे

(क) जनता,

(ख) भू-भाग, जहाँ जनता निवास करती है,

(ग) सरकार, जो जनता के लिए कानून बनाती है और

(घ) सम्प्रभुता जिसके अन्तर्गत निर्णय तथा मामलों को व्यवस्थित करने की स्वतन्त्रता प्राप्त होती है।

राज्य के आधार तथा भूमिका के विषय में विभिन्न धारणाएँ हैं। आधुनिक पश्चिमी उदारवादी विचार, सोलहवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में वाणिज्यिक क्रान्ति को बढ़ावा दिया गया, जो अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति के लिए मुख्य प्रेरक स्रोत बना। इन क्रान्तियों के फलस्वरूप नई आर्थिक व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसे पूँजीवाद का नाम दिया गया।

बाजार उस स्थान को कहते हैं, जहाँ वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदी तथा बेची जाती हैं। माँग और पूर्ति के आधार पर यह

www.neerajbooks.com